

छहवाला - बाल ३

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



99260-40137



तीसरी ढाल में किसका वर्णन है?



➤ सम्यग्दर्शन का

आत्म को हित है सुख सो सुख आकुलता बिन कहिये।
आकुलता शिवमांहि न तातैं शिवमग लाग्यो चाहिये॥
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण शिवमग सो दुविध विचारो।
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो॥ १ ॥

- आत्मा का हित सुख में है, वह सुख आकुलता रहित कहा है।
- आकुलता मोक्ष में नहीं है, इसलिए मोक्षमार्ग में लगना चाहिये।
- सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र इन तीनों की एकता मोक्ष का मार्ग है। उस मोक्षमार्ग का दो प्रकार से विचार करना चाहिये।
- जो वास्तविक स्वरूप है वह निश्चय मोक्षमार्ग है और जो उसका कारण है वह व्यवहार मोक्षमार्ग है।

मोक्ष का मार्ग क्या हैं ?



➤ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान,
सम्यक्चारित्र(रत्नत्रय) की एकता

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

मोक्षमार्ग कितने हैं ?

➤ मोक्षमार्ग एक हैं , उसका विचार(निरूपण) दो प्रकार से है

निश्चय मोक्षमार्ग	व्यवहार मोक्षमार्ग
वास्तविक (सच्चा)	कारण
सत्यार्थ	असत्यार्थ

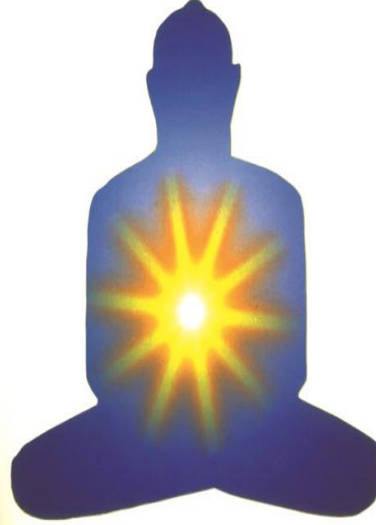
परद्रव्यनतैं भिन्न आप में, रुचि सम्यक्त्व भला है।
आप रूप को जानपनो सो, सम्यक्ज्ञान कला है॥
आप रूप में लीन रहे थिर, सम्यक्चारित सोई।
अब व्यवहार मोक्ष-मग सुनिये, हेतु नियत को होई॥ २॥

निश्चय रत्नत्रय

पर द्रव्यों से
भिन्न अपनी
आत्मा की
रुचि (श्रद्धा)

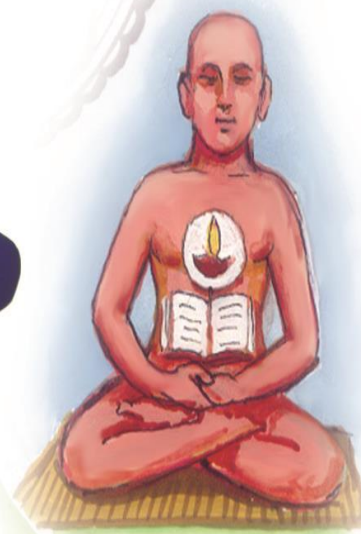


निश्चयसम्यग्दर्शन



निश्चयसम्यक्चारित्र

पर द्रव्यों से
भिन्न अपनी
आत्मा में
लीनता



निश्चयसम्यग्ज्ञान

पर द्रव्यों से
भिन्न अपनी
आत्मा का
ज्ञान

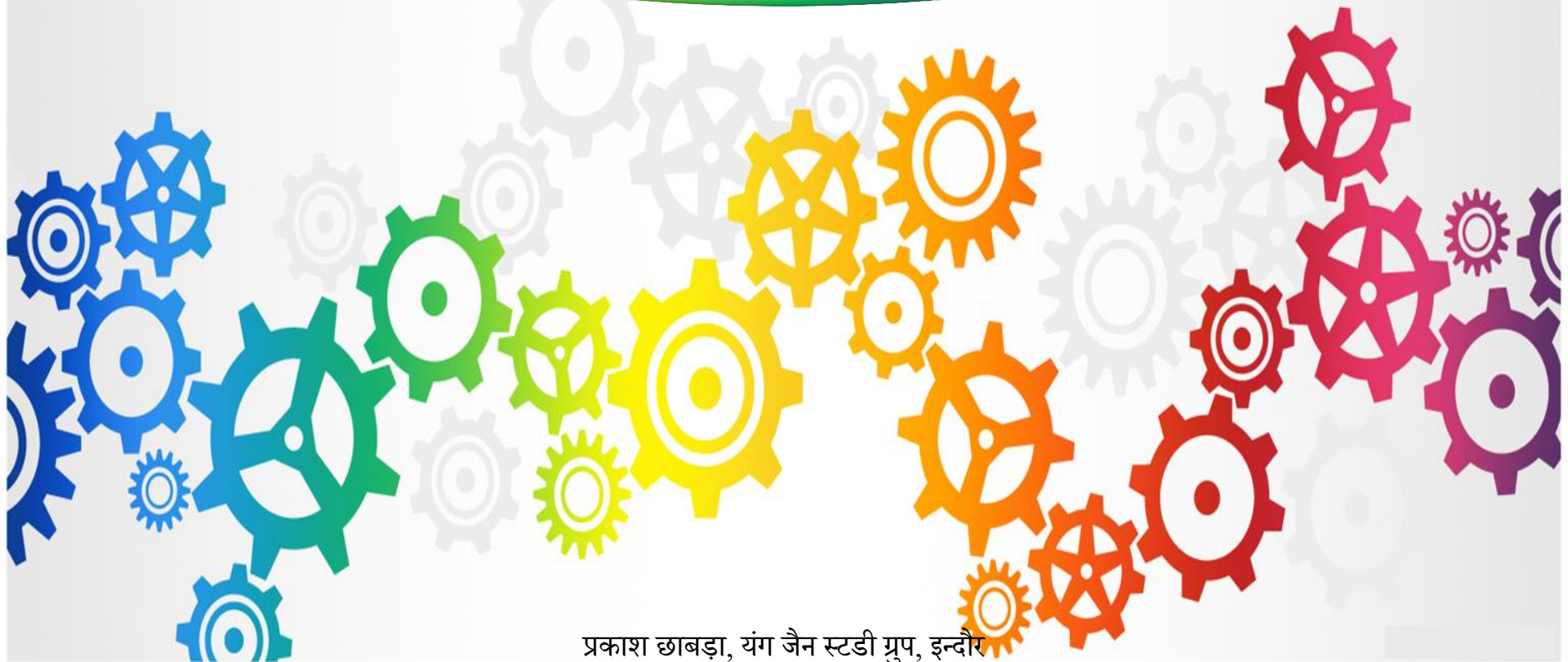
अब व्यवहार मोक्षमार्ग सुनो जो निश्चय
मोक्षमार्ग का निमित्त कारण है ।



जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव, बन्ध रु संवर जानो।
निर्जर मोक्ष कहे जिन तिनको, ज्यों का त्यों सरधानो॥
है सोई समकित व्यवहारी, अब इन रूप बखानो।
तिनको सुन सामान्य विशेषैं, दिढ़ प्रतीति उर आनो॥ ३॥

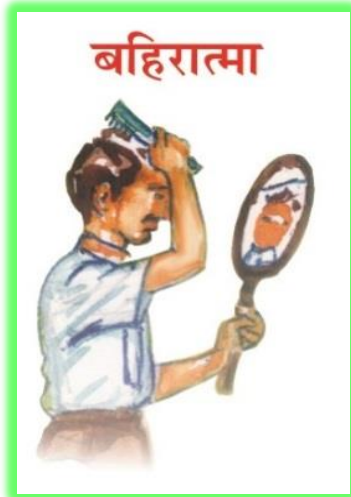
- जिनेन्द्रदेव ने जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष ये सात तत्त्व कहे हैं।
 - उन सबकी यथावत-यथार्थरूप से श्रद्धा करो।
 - इस प्रकार श्रद्धा करना, वह व्यवहार से सम्यग्दर्शन है।
 - अब, इन सात तत्त्वों के स्वरूप का वर्णन करते हैं।
- उसे संक्षेप से तथा विस्तार से सुनकर मन में अटल श्रद्धा करो।

जीव तत्त्व का वर्णन



बहिरात्म, अन्तर आत्म, परमात्म जीव त्रिधा है।
 देह जीव को एक गिनै, बहिरात्म तत्त्व मुधा है॥
 उत्तम मध्यम जघन त्रिविध के, अन्तर आत्म ज्ञानी।
 द्विविध संग बिन शुध उपयोगी, मुनि उत्तम निज ध्यानी॥४॥

➤ बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा-इस प्रकार जीव तीन प्रकार के हैं।



- उनमें जो शरीर और आत्मा को एक मानता है, वह बहिरात्मा है,
- वह बहिरात्मा यथार्थ तत्त्वों से अज्ञान अर्थात् तत्त्वमूढ - मिथ्यादृष्टि है।

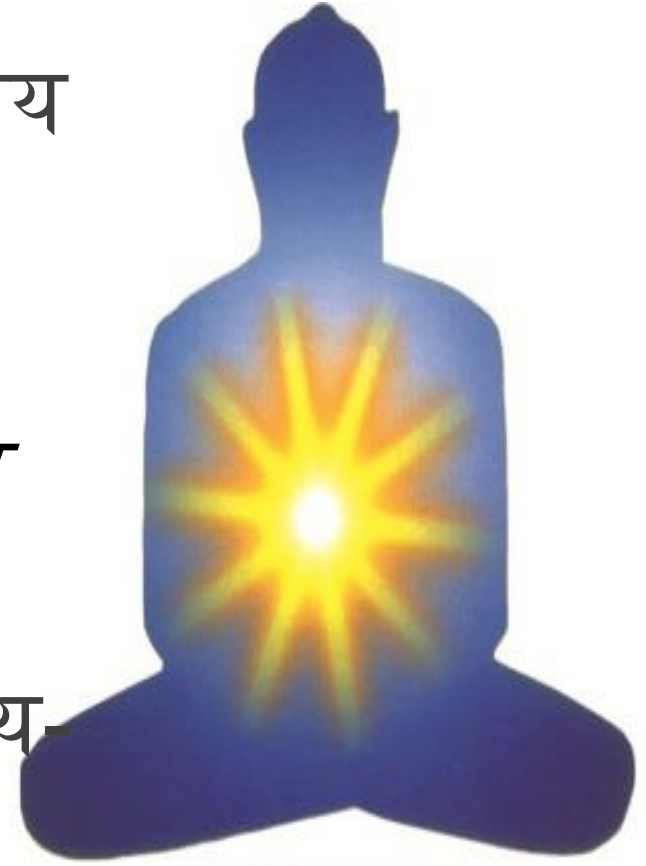
बहिरात्मा



➤ आत्मा को परवस्तुओं से
भिन्न जानकर यथार्थ निश्चय
करने वाले अन्तरात्मा
कहलाते हैं।

(जो अपने में ही अपनापन
मानें)

➤ वे उत्तम मध्यम और जघन्य-
ऐसे तीन प्रकार के हैं।



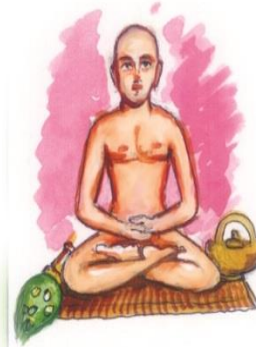
आत्मा



जघन्य



मध्यम



उत्तम

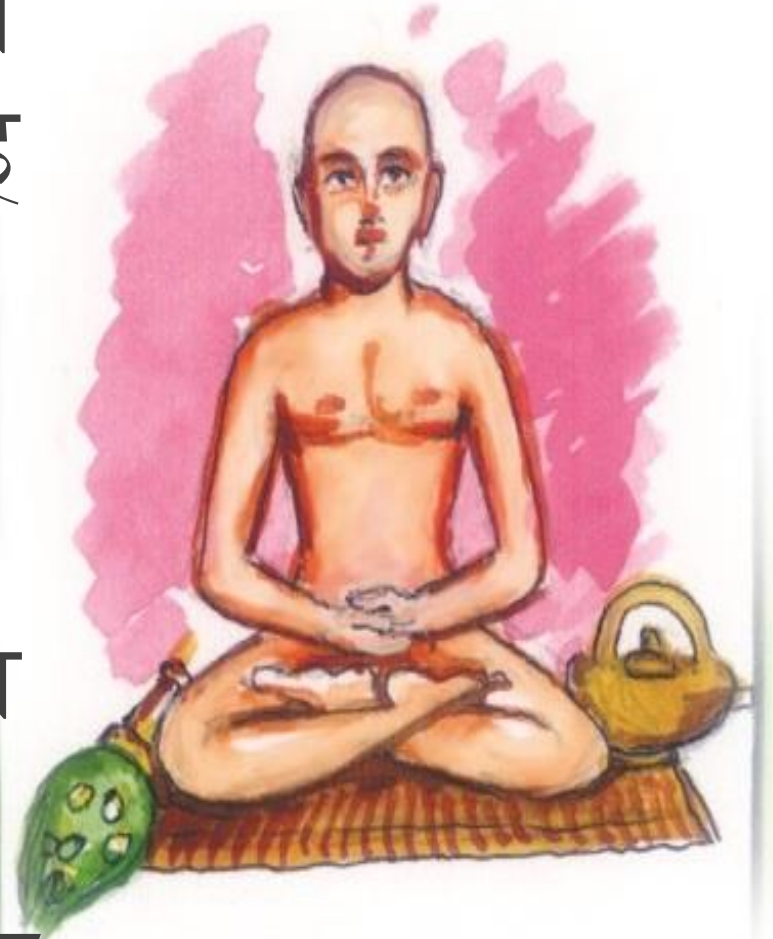
अन्तरात्मा

➤ उनमें -

➤ अंतरंग-बहिरंग ऐसे
दो प्रकार के परिग्रह
रहित

➤ शुद्ध उपयोगी
आत्मध्यानी
दिगम्बर मुनि उत्तम
अन्तरात्मा हैं।

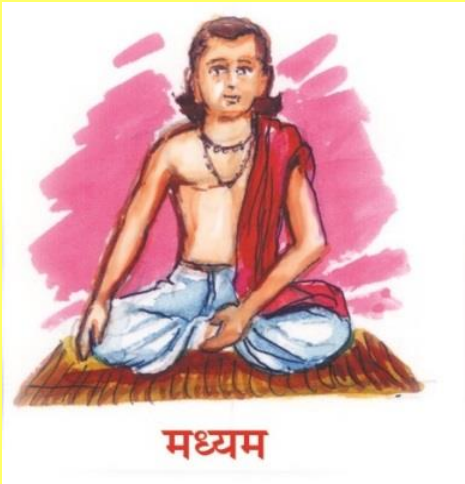
(अरहंत बनने से तुरंत
पहले)



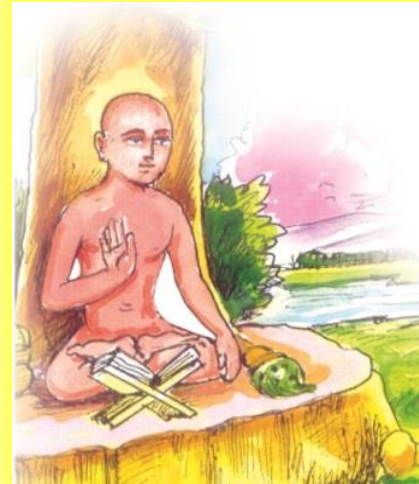
उत्तम

मध्यम अन्तर-आतम हैं जे देशव्रती अनगारी।
जघन कहे अविरत-समदृष्टि, तीनों शिवमगचारी॥
सकल निकल परमात्म द्वैविध, तिनमें घाति निवारी।
श्री अरिहंत सकल परमात्म, लोकालोक निहारी॥५॥

➤ मध्यम अंतरात्मा व्रती श्रावक और गृहत्यागी (शुभोपयोगी) मुनिराज है।



मध्यम



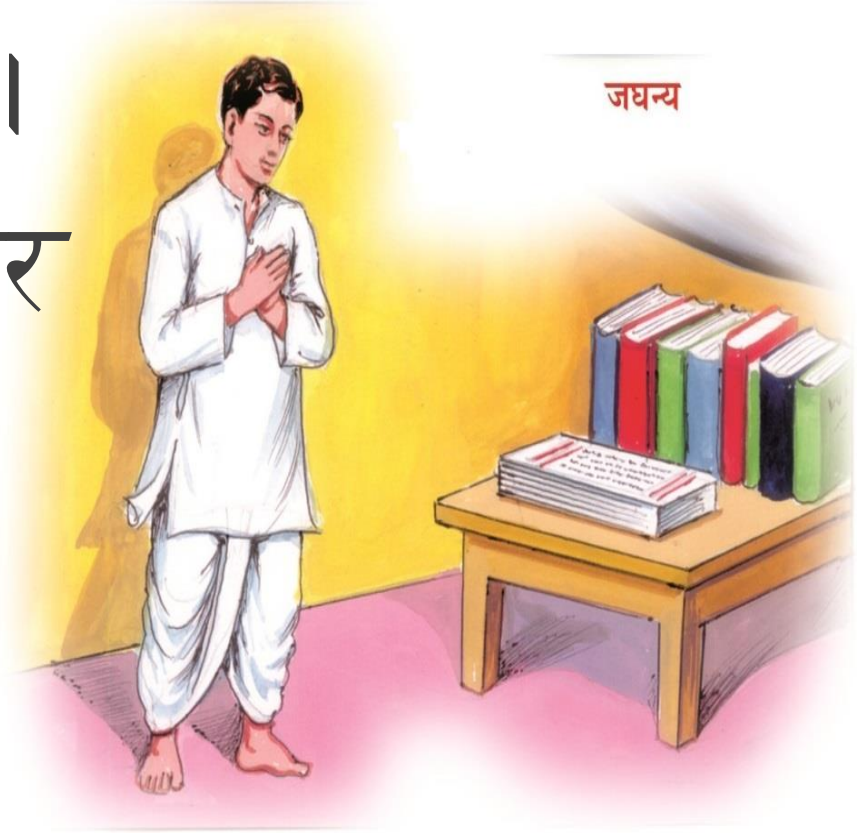
➤ जघन्य

अंतरात्मा अव्रती
सम्यग्दृष्टि है ।

(ज्ञानी तो है, पर
व्रती नहीं)

➤ ये तीनों

अंतरात्मा
मोक्षमार्ग में
चलने वाले है।



शरीर
सहित
परमात्मा



सकल

जो
वीतरागी
और सर्वज्ञ
हो वह
परमात्मा हैं



निकल

शरीर
रहित
परमात्मा

अरहंत

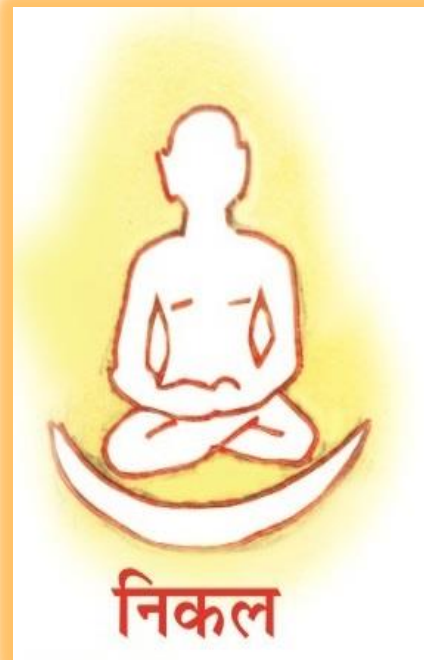
सिद्ध

➤ परमात्मा सकल और निकल दो प्रकार के है।

उनमें घाति कर्म का नाश करने वाले अरहंत शरीर सहित परमात्मा है, जो लोक-अलोक को जानते-देखते है।

ज्ञानशरीरी त्रिविध कर्म मल-वर्जित सिद्ध महन्ता।
 ते हैं निकल अमल परमात्म भोगैं शर्म अनन्ता॥
 बहिरात्मता हेय जानि तजि, अन्तर आत्म हूजै।
 परमात्म को ध्याय निरन्तर, जो नित आनन्द पूजै॥ ६॥

- ज्ञान मात्र जिनका शरीर है, ऐसे ज्ञानावरणादि द्रव्य कर्म, रागादि भाव कर्म, शरीरादि नोकर्म – तीन प्रकार के कर्म मल से रहित
- महान सिद्ध जो शरीर रहित, निर्मल परमात्मा है।
- वे अपरिमित सुख भोगते हैं।



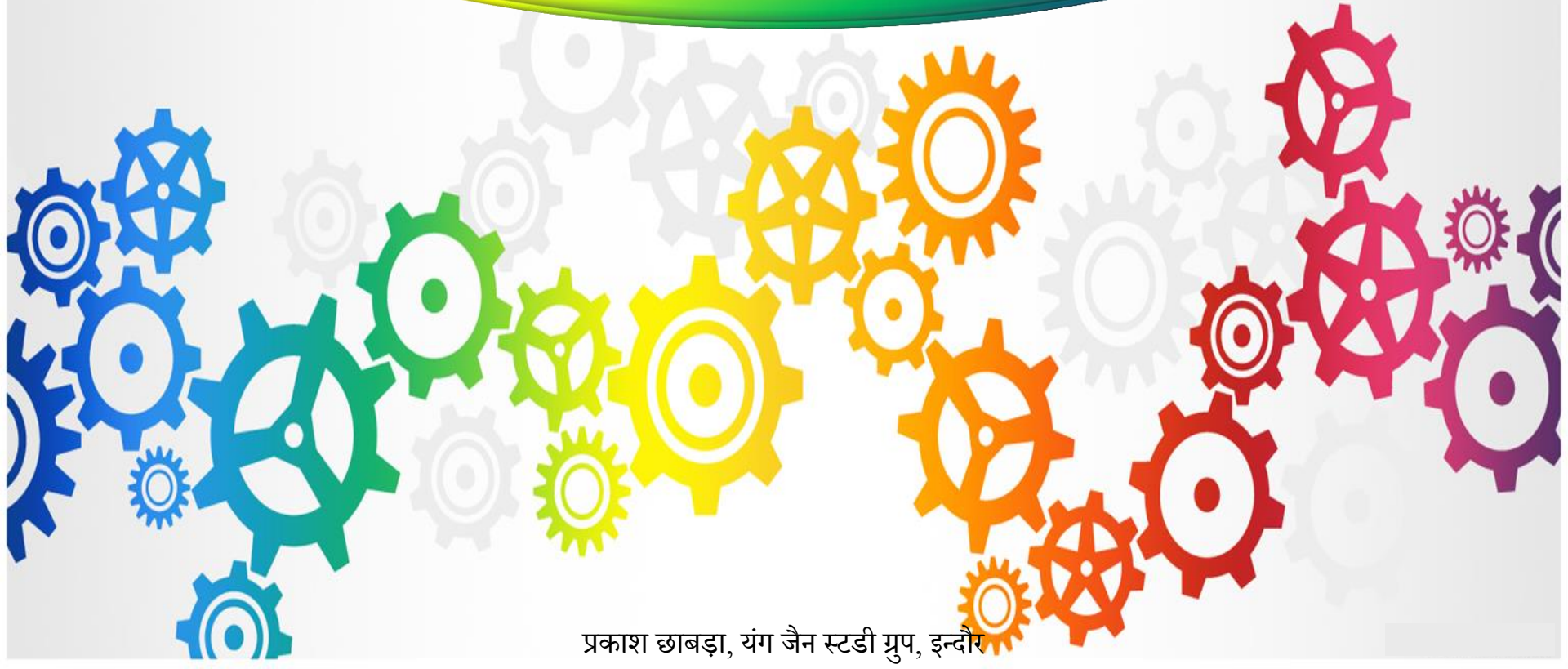
इन तीनों में
बहिरात्मपने को
हेय जानकर
छोडना चाहिये

और अंतरात्मा
होना चाहिये

और सदा परमात्मा का ध्यान
करना चाहिये, जिसके द्वारा अनंत
आनंद प्राप्त किया जाता है ।



अजीव तत्त्व का वर्णन



चेतनता बिन सो अजीव है, पंच भेद ताके हैं।
पुद्गल पंच वरन-रस, गंध दो फरस वसू जाके हैं॥
जिय पुद्गल को चलन सहाई, धर्म-द्रव्य अनरूपी।
तिष्ठत होय अधर्म सहाई, जिन बिन मूर्ति निरूपी॥७॥

➤ जो चेतनता रहित हैं वे अजीव हैं;
जिनके पाँच भेद हैं।

अजीवतत्त्व



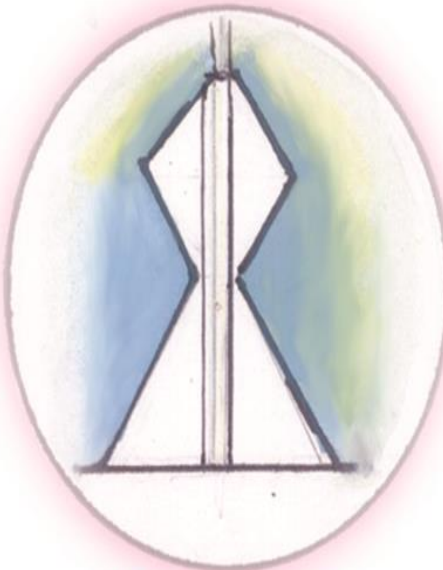
पुद्गलद्रव्य



अधर्मद्रव्य



धर्मद्रव्य



आकाशद्रव्य



कालद्रव्य

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



पुद्गल

जिनमें पुद्गल के पाँच वर्ण और
रस, दो गंध और आठ स्पर्श
होते हैं।

धर्मद्रव्य

जीव और पुद्गल को गमन में
निमित्त और अमूर्तिक है, वह
धर्मद्रव्य है।

अधर्मद्रव्य

तथा गतिपूर्वक स्थिति में निमित्त
होता है, वह अधर्मद्रव्य है। जिनेन्द्र
भगवान ने उसे अर्थात् अधर्मद्रव्य
को भी अमूर्तिक कहा है।

सकल-द्रव्य को वास जास में, सो आकाश पिछ्छानो।
नियत वर्तना निशिदिन सो, व्यवहार काल परिमानो॥
यों अजीव, अब आस्रव सुनिये, मन-वच-काय त्रियोगा।
मिथ्या अविरत अरु कषाय, परमाद सहित उपयोगा॥ ८॥

जिसमें समस्त द्रव्यों का
निवास है, वह आकाश
द्रव्य जानना।

आकाशद्रव्य



आकाशद्रव्य

स्वयं परिवर्तित हो और
दूसरों को परिवर्तित होने
में निमित्त हो, वह
निश्चयकाल है तथा रात्रि,
दिवस आदि, वह व्यवहार
काल जानो।

कालद्रव्य



कालद्रव्य

इस प्रकार अजीवतत्त्व का वर्णन
पूर्ण हुआ।
अब, आस्रव तत्त्व का स्वरूप सुनो।





आस्रव क्या है?

➤ मोह, राग, द्वेष
भावों के निमित्त
से कर्मों का आना





आस्रव के भेद

मिथ्यात्व

- अतत्त्वश्रद्धान

अविरति

- इन्द्रिय विषयों व प्राणी हिंसा का त्याग न होना

प्रमाद

- अच्छे कार्यों में अनुत्साह/ स्वरूप की असावधानी

कषाय

- जो आत्मा को कसे अर्थात् दुःख दे

योग

- मन वचन व काय के निमित्त से आत्म प्रदेशों का परिस्पंदन(कम्पन)

ये ही आत्म के दुःखकारण, तातैं इनको तजिये।
जीव प्रदेश बँधे विधि सों सो, बंधन कबहूँ न सजिये॥
शम-दमतैं जो कर्म न आवैं, सो संवर आदरिये।
तप-बलतैं विधि-झरन निरजरा, ताहि सदा आचरिये॥ ९॥

➤ यह मिथ्यात्वादि आस्रव ही आत्मा
को दुःख के कारण हैं, इसलिए इन
मिथ्यात्वादि को छोड़ देना चाहिए ।

बंध्य तत्त्व का वर्णन





बंध क्या है?

➤ रागादि भावों के
निमित्त से कर्मों का
आत्मा के साथ संबंध
होना





संवर क्या है?

➤ वीतरागी (शुद्ध) भावों
के द्वारा नवीन कर्मों का
आना रुकना





संवर के कारण

शम

कषायों का
अभाव

दम

इन्द्रियों का
जीतना



निर्जरा क्या है?

➤ वीतरागी (शुद्ध) भावों
की वृद्धि से पूर्व बंधे कर्मों
का एकदेश खिरना





निर्जरा का कारण

तप है

इच्छाओं का रुकना



आस्रव को

- दुःख का कारण जान छोड़ना चाहिए

बंध

- कभी नहीं करना चाहिए

संवर

- ग्रहण करना चाहिए

निर्जरा

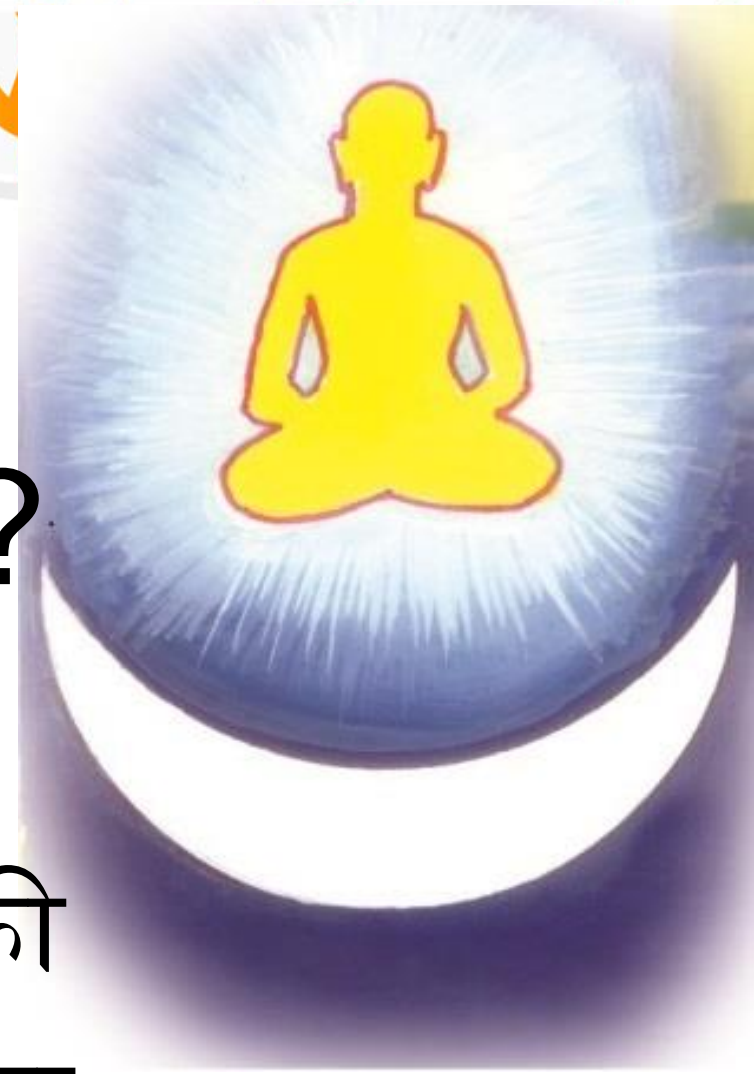
- प्राप्त करना चाहिए

सकल-कर्मतैं रहित अवस्था, सो शिवथिर सुखकारी।
इहविधि जो सरधा तत्त्वन की, सो समकित व्यवहारी॥
देव जिनेन्द्र, गुरु परिग्रह बिन, धर्म दयाजुत सारो।
येहु मान समकित को कारण, अष्ट-अंग-जुत धारो॥ १०॥



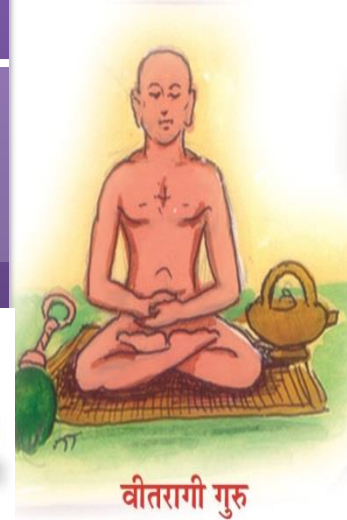
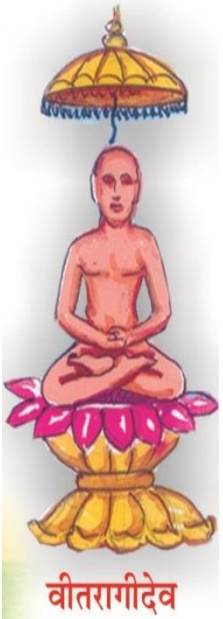
मोक्ष क्या है?

- सर्व कर्म से रहित आत्मा की
- स्थिर शुद्ध निराकुल अवस्था
- वीतरागता की पूर्णता



➤ इस प्रकार जो सात तत्त्वों की श्रद्धा है, वह व्यवहार सम्यग्दर्शन है ।

देव	जिनेन्द्र	जिन्होंने इन्द्रियों और मोह राग द्वेष को जीता हो
गुरु	परिग्रह रहित	२४ प्रकार के अंतरंग व बहिरंग परिग्रह से रहित
धर्म	दया युक्त	स्व व पर की दया



➤ इन देव, गुरु, धर्म को सम्यक्त्व का निमित्त कारण जानना ।

➤ सम्यग्दर्शन को आठ अंग सहित धारण करना चाहिए।

वसु मद टारि निवारि त्रिशठता, षट् अनायतन त्यागो।
 शंकादिक वसु दोष बिना, संवेगादिक चित पागो॥
 अष्ट अंग अरु दोष पचीसों, तिन संक्षेपै कहिये।
 बिन जाने तैं दोष-गुननकों, कैसे तजिये गहिये॥ ११॥

- आठ मद का त्याग करके, तीन प्रकार की मूढता को हटाकर, छह अनायतनों का त्याग करना चाहिए।
- शंकादि आठ दोषों से रहित होकर संवेग, अनुकम्पा, आस्तिक्य, और प्रशम भावना में मन को लगाना चाहिए।
- अब, सम्यक्त्व के आठ अंग और पच्चीस दोषों को संक्षेप में कहा जाता है क्योंकि उन्हें जाने बिना दोषों को किस प्रकार छोड़ें और गुणों को किस प्रकार ग्रहण करें।



व्यवहार सम्यग्दर्शन क्या है ?

- सात तत्त्वों का श्रद्धान
- देव, शास्त्र गुरु का श्रद्धान
- स्व - पर भेद विज्ञान
 - 8 अंग सहित
 - 25 दोष रहित
- संवेगादि भावना सहित



सम्यक्त्व के

8 अंग

25 दोष

8 मद

3 मूढता

6
अनायतन

4 शंकादि
दोष

सम्यग्दर्शन के आठ अङ्ग



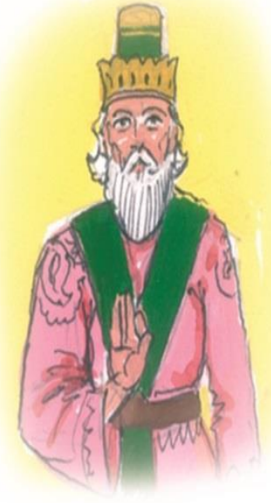


देवमूढ़ता

तीन मूढ़ता



धर्ममूढ़ता



गुरुमूढ़ता

सम्यग्दर्शन के 25 दोष



षट् अनायतन



संवेगादि भावना

संवेग

- धर्म और धर्म के फल में अनुराग

प्रशम

- कषायों की मंदता

अनुकम्पा

- दया

आस्तिक्य

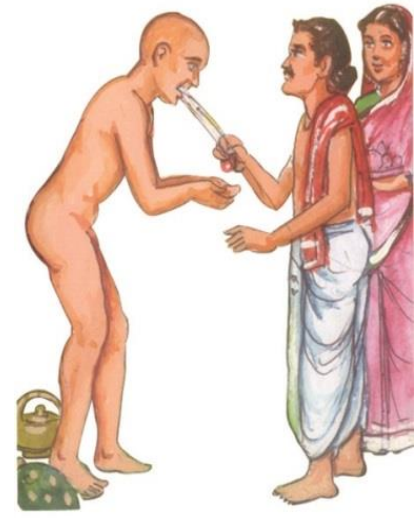
- जिन वचनों में आस्था / श्रद्धा

जिन वच में शंका न धार वृष, भव-सुख-वांछा भानै।
 मुनि-तन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व कुतत्त्व पिछानै॥
 निजगुण अरु पर औगुण ढाँके, वा निज-धर्म बढ़ावै।
 कामादिक कर वृषतैं चिगते, निज पर को सु दिढावै॥ १२॥

- १. सर्वज्ञ देव के कहे हुए तत्त्वों में संशय-संदेह नहीं करना, निःशंकित अंग है;
- २. धर्म को धारण करके सांसारिक सुखों कि इच्छा नहीं करना, निःकांक्षित अंग है;



➤ ३. मुनियों के शरीरादि
मैले देखकर घृणा नहीं
करना, निर्विचित्सा अंग
है;



निर्विचिकित्साअङ्ग



➤ ४. सच्चे और झूठे तत्त्वों
की पहिचान करना,
अमूढदृष्टि अंग है;



➤ ५. अपने गुणों को और दूसरे के अवगुणों को छिपाना तथा अपने आत्मधर्म को निर्मल बनाना, **उपगूहन अंग** है;

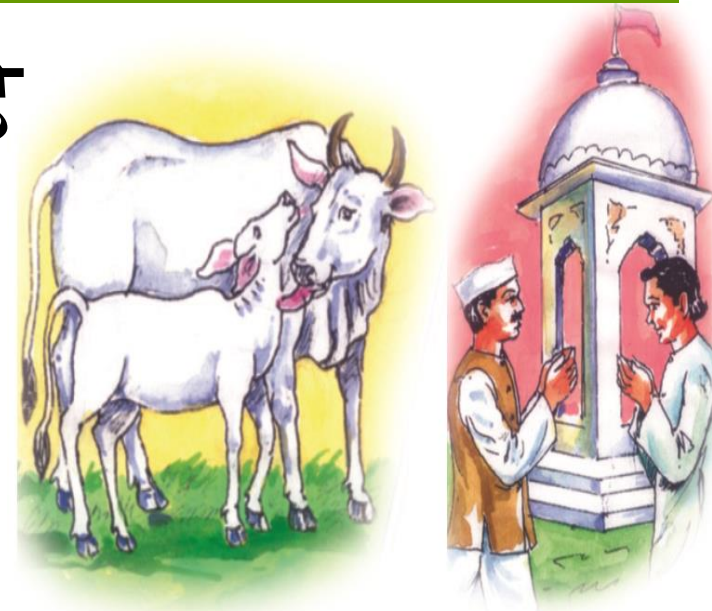
➤ ६. काम-विकारादि के कारण धर्म से च्युत होते हुए अपने को तथा पर को उसमें पुनः दृढ करना, **स्थितिकरण अंग** है ।



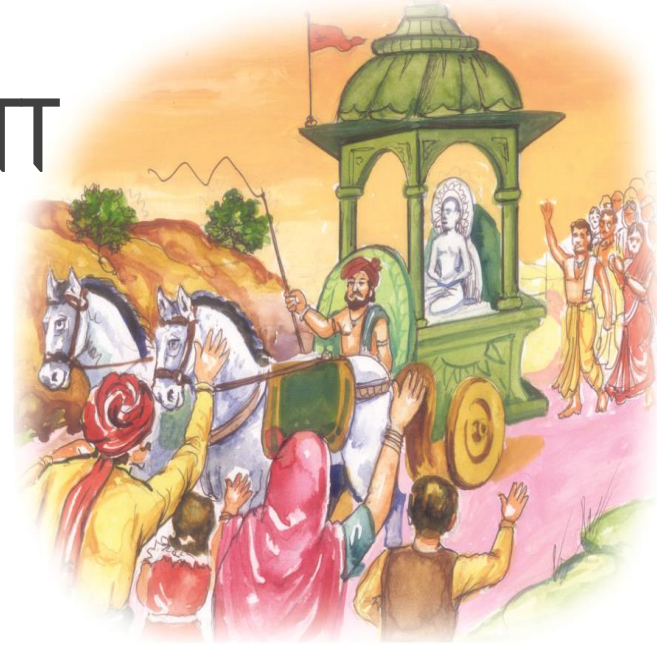
स्थितिकरणअङ्ग

धर्मीसों गौ-वच्छ-प्रीति सम, कर जिन-धर्म दिपावै।
 इन गुणतैं विपरीत दोष वसु, तिनकों सतत खिपावै॥
 पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय न तो मद ठानै।
 मद न रूप को, मद न ज्ञान को, धन बल को मद भानै॥ १३॥

➤ ७. साधर्मीजनों से बछड़े
 पर गाय की प्रीति के
 समान प्रेम रखना,
 वात्सल्य अंग है, और



➤ ८. जैनधर्म की शोभा
में वृद्धि करना,
प्रभावना अंग है ।



प्रभावनाअङ्ग

इन आठ गुणों से उल्टे
आठ दोष हैं, उन्हें
सम्यग्दृष्टि जीव को
दूर करना चाहिए ।



प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

- सम्यग्दृष्टि यदि पिता आदि पितृपक्ष के स्वजन राजादि हों तथा यदि मामा आदि मातृपक्ष के स्वजन राजादि हों तो अभिमान नहीं करता ।
- शारीरिक सौन्दर्य का अभिमान नहीं करता;
- विद्या का अभिमान नहीं करता;
- लक्ष्मी का अभिमान नहीं करता;
- शक्ति का अभिमान नहीं करता ।

8 मद



कुलमद



जातिमद



रूपमद



ज्ञानमद



धनमद



बलमद



तपमद



प्रभतामद

तप को मद न मद जु प्रभुता को, करै न सो निज जानै।
मद धारै तो यही दोष वसु, समकित को मल ठानै॥
कुगुरु-कुदेव-कुवृष-सेवक की, नहिं प्रशंस उचरै है।
जिनमुनि जिनश्रुत विन कुगुरादिक, तिन्हें न नमन करै है। १४।

- सम्यग्दृष्टि जीव तप का अभिमान नहीं करता,
- और, ऐश्वर्य - बडप्पन का अभिमान नहीं करता, वह अपने आत्मा को जानता है।
- यदि जीव उनका अभिमान रखता है तो ऊपर कहे हुए मद आठ दोषरूप होकर सम्यग्दर्शन को दूषित करते हैं।

- सम्यग्दृष्टि जीव कुगुरु, कुदेव और कुधर्म और उनके सेवक की प्रशंसा नहीं करता ।
- जिनेन्द्रदेव, वीतरागी मुनि, और जिनवाणी के अतिरिक्त जो कुगुरु, कुदेव, कुधर्म हैं, उन्हें नमस्कार नहीं करता।



अनायतन किसे कहते हैं

➤ धर्म का अस्थान

अनायतन कौन-२ से है

कुगुरु

कुदेव

कुधर्म

कुगुरु
सेवक

कुदेव
सेवक

कुधर्म
सेवक

दोषरहित गुणसहित सुधी जे, सम्यग्दरश सजै हैं।
चरितमोह वश लेश न संजम, पै सुरनाथ जजै हैं॥
गेही, पै गृह में न रचै ज्यों, जलतैं भिन्न कमल है।
नगरनारि को प्यार यथा, कादे में हेम अमल है॥ १५॥

- जो बुद्धिमान पुरुष ऊपर कहे हुए पच्चीस दोषरहित तथा निःशंकादि आठ गुणों सहित सम्यग्दर्शन से भूषित हैं
- उन्हें चारित्रमोहनीय कर्म के उदयवश किंचित भी संयम नहीं है



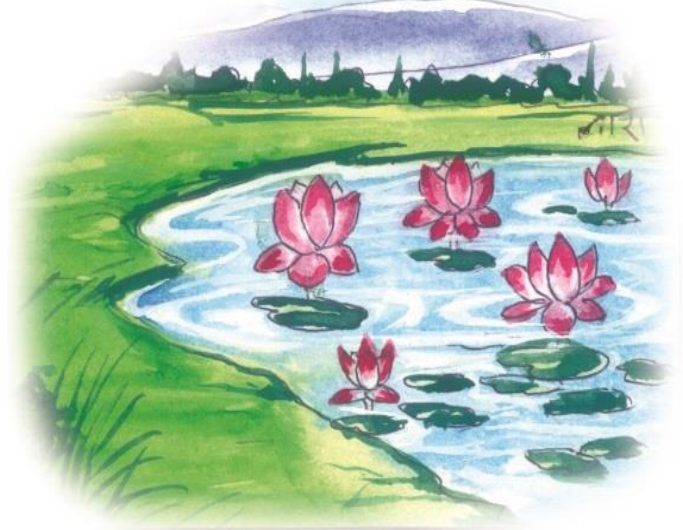
देवों द्वारा आदर पाते हैं

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



- तथापि देवों के स्वामी इन्द्र द्वारा प्रशंसा पाते हैं ।

➤ यद्यपि वे गृहस्थ हैं तथापि घर में नहीं रचते । जिस प्रकार कमल जल से भिन्न रहता है ।



जल में कमल की भाँति अलिप्त हैं ।

- सम्यग्दृष्टि का घर में वेश्या के प्रेम की भाँति प्रेम होता है ।
- तथा जिस प्रकार कीचड़ में स्वर्ण शुद्ध रहता है उसी प्रकार सम्यग्दृष्टि घर में रहता है ।

प्रथम नरक विन षट् भू ज्योतिष वान भवन षंड नारी।
थावर विकलत्रय पशु में नहीं, उपजत सम्यक् धारी॥
तीनलोक तिहुँ काल माहिं नहीं, दर्शन सो सुखकारी।
सकल धरम को मूल यही, इस विन करनी दुःखकारी॥ १ ६॥



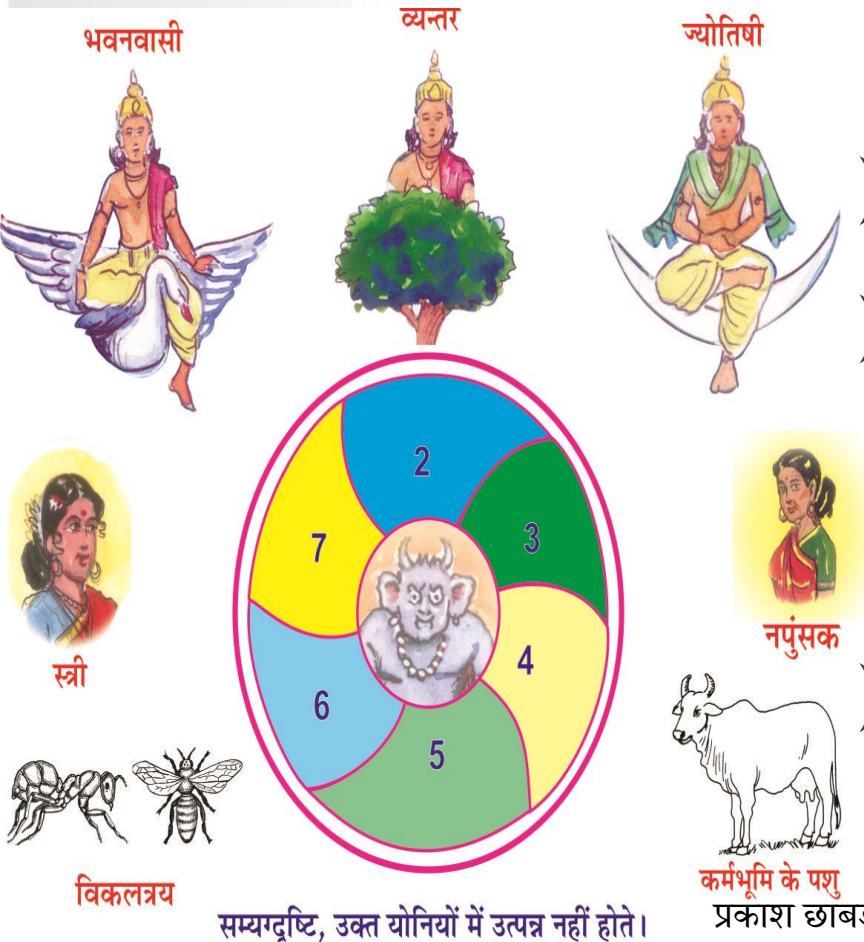
➤ सम्यग्दृष्टि जीव पहले नरक के अतिरिक्त शेष छह नरकों में

➤ ज्योतिषी देवों में, व्यन्तर देवों में, भवनवासी देवों में,

➤ नपुंसकों में, स्त्रियों में,

➤ पाँच स्थावरों में, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवों में

➤ तथा कर्मभूमि के पशुओं में उत्पन्न नहीं होते ।





- तीन लोक तीन काल में
सम्यग्दर्शन के समान
सुखदायक अन्य कुछ नहीं है।
- यह सम्यग्दर्शन ही समस्त
धर्मों का मूल है; इस
सम्यग्दर्शन के बिना समस्त
क्रियाएँ दुःखदायक हैं।

मोक्षमहल की परथम सीढ़ी, या बिन ज्ञान-चरित्रा।
सम्यकता न लहै सो दर्शन, धारो भव्य पवित्रा॥
'दौल' समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवै।
यह नरभव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक् नहिं होवै॥ १७॥



सम्यग्दर्शन, मोक्षमहल की पहली सीढ़ी है।

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

➤ यह सम्यग्दर्शन मोक्षरूपी महल की प्रथम सीढ़ी है ।

➤ इस सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान और चारित्र सम्यक्पने को प्राप्त नहीं करते;

➤ इसलिए हे जीवों! ऐसे पवित्र सम्यग्दर्शन को धारण करो ।

➤ हे विवेकी समझदार दौलतराम ! सुन समझ और सावधान हो; समय को व्यर्थ न गँवा क्योंकि यदि सम्यग्दर्शन नहीं हुआ तो यह मनुष्य पर्याय पुनः मिलना दुर्लभ है।

